

डॉ. रॉबर्ट यारब्रॉ, पास्टोरल एपिस्टल्स, सत्र 3, 1 तीमुथियुस 2

© 2024 रॉबर्ट यारब्रॉ और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ हैं, जो देहाती धर्मपत्रों, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए अपोस्टोलिक निर्देश, सत्र 3, 1 टिमोथी 2 पर अपने शिक्षण में हैं।

हम देहाती पत्रों का अपना अध्ययन जारी रखते हैं। हम 1 तीमुथियुस में हैं और हम 1 तीमुथियुस 2 करने वाले हैं। 1 तीमुथियुस 2 शायद हाल की पीढ़ियों में देहाती पत्रों में सबसे अधिक चर्चा वाला अध्याय है क्योंकि अध्याय 2 पद 12 में पॉल एक महिला को पढ़ाने की अनुमति नहीं देने के बारे में कुछ कहता है या एक आदमी पर अधिकार जताओ, और हम उस तक पहुंच जाएंगे।

लेकिन मैं हमें उस चीज़ की याद दिलाना चाहता हूँ जिसका हम पहले ही सामना कर चुके हैं जहाँ हम देखते हैं कि बाइबल की शिक्षाएँ आधुनिक संस्कृति से मेल नहीं खाती हैं। 1 तीमुथियुस 1 में, पॉल कानून के उपयोग के बारे में बात करता है और वह कहता है कि यह कानून तोड़ने वालों के लिए है। बहुत सारे नकारात्मक पदनामों के बीच में, वह यौन रूप से अनैतिक लोगों का उल्लेख करता है और वह समलैंगिकता का अभ्यास करने वालों का उल्लेख करता है।

बाइबल समलैंगिकता, समान-लिंग संबंधों को एक ऐसी चीज़ के रूप में प्रस्तुत करती है जो अव्यवस्थित है और इसे पुराने नियम में घृणित कहा जाता है। जबकि टिप्पणीकारों ने रचनात्मक होने की कोशिश की है और रोमन 1 को इस तरह से पढ़ा है कि सहमति देने वाले वयस्कों के बीच समलैंगिक संबंध ठीक है, मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में पवित्रशास्त्र के बड़े दायरे में काम करता है। जब हम 1 तीमुथियुस 2 में जाते हैं तो मैं बस हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि हम 1 तीमुथियुस 2 को कैसे पढ़ते हैं, यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि हम आज चर्च के लिए स्त्री और पुरुष के बारे में बाइबल के दृष्टिकोण को कितना आधिकारिक मानते हैं।

यदि हमारे पास पुरुष और महिला के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण है, तो हम कहेंगे, वह तब और वहाँ बाइबिल थी, लेकिन अब हम अलग हैं और हम अब पुरुषों और महिलाओं और उनके विशिष्ट पर बाइबिल की शिक्षाओं से बंधे नहीं हैं सेवा और परमेश्वर की महिमा की विशेषताएँ और विशिष्ट प्रांत। मुझे लगता है कि व्याख्यानों की सूची के नीचे पोस्ट किया जाएगा, जिसे साल्ज़बर्ग कहा जाएगा, जैसे साल्ज़बर्ग, ऑस्ट्रिया में, साल्ज़बर्ग घोषणा, और यह एक ऑनलाइन संसाधन होगा। मुझे पता है कि यह अभी भी वहाँ है, मुझे नहीं पता कि इसे कितने वर्षों तक रखा जाएगा, लेकिन यह यूरोपीय कैथोलिक, रूढ़िवादी, प्रोटेस्टेंट का एक जर्मन भाषी संग्रह था, जिसमें प्रोटेस्टेंट उदारवादी और प्रोटेस्टेंट इंग्लिश नेता शामिल थे, जिन्होंने एक लंबे बयान पर हस्ताक्षर किए थे जिसे वे मनुष्य की पारिस्थितिकी कहते हैं और वे परिस्थितियाँ जिनके अंतर्गत मानव जीवन फल-फूल सकता है।

मूलतः, दस्तावेज़ का तर्क यह है कि बाइबल सत्य है। यह पश्चिमी यूरोप और जर्मन भाषी पश्चिमी यूरोप से आना एक तरह से आश्चर्यजनक है जहाँ ये वे लोग हैं जो आधुनिक विश्वविद्यालय और

बहुत उच्च सांस्कृतिक विचारों में प्रशिक्षित हैं, लेकिन ये ऐसे लोग हैं जो धर्मशास्त्री और पादरी हैं जो महसूस करते हैं कि बाइबिल सत्य है और बाइबल केवल चर्च शिक्षण के लिए ही नहीं, बल्कि मानव उत्कर्ष के लिए भी आवश्यक है। यदि हमारे पास पिता नहीं हैं, यदि हमारी माताएं नहीं हैं, तो हमारे पास उन भूमिकाओं के बीच स्पष्ट अंतर नहीं है, और बहुत सारी बुरी चीजें आती हैं, और दस्तावेज़ एक तरफ लिंग का एक ठोस बाइबिल धर्मशास्त्र प्रस्तुत करता है, लेकिन यह जूडिथ बटलर, जो एक अमेरिकी विचारक हैं, और लिंग सिद्धांत पर उनके काम के बारे में भी बहुत सीधे तौर पर बात करते हैं, जिसने वास्तव में उन चीजों के दरवाजे खोलने में मदद की, जिन्हें हम आधुनिक समय में ट्रांस और सेक्स परिवर्तन कहा जाता है की पुष्टि के साथ देख रहे हैं। और सभी प्रकार के प्रयोग, यहाँ तक कि बच्चों और किशोरों को दवाएँ और सर्जरी आदि दी जा रही हैं।

ठीक है, भगवान दुनिया से प्यार करते हैं और भगवान लोगों को बचाना चाहते हैं, चाहे वे किसी भी प्रकार की त्रुटियों के दोषी क्यों न हों, इसलिए हम बाइबल के बारे में नफरत फैलाने वाली भाषा के संदर्भ में नहीं सोचना चाहते हैं, लेकिन अगर नफरत भरी भाषा का मतलब पुष्टि करना है पुरुष और स्त्री के बारे में और यौन अनैतिकता के बारे में और व्यभिचार के बारे में और व्यभिचार के बारे में और समलैंगिक संबंधों के बारे में ईश्वर की दृष्टि में क्या सच है, ये ऐसी चीजें हैं जो अनन्त ईश्वर की इच्छा और मनुष्यों के लिए रहस्योद्घाटन का हिस्सा हैं जिन्हें उसने बनाया और उसने बनाया मालिक है, और अंत में, वह लोगों पर अपने अस्तित्व की शर्तों को लागू करेगा। और जैसा कि पुराने नियम में है, हमने इसे पूरी तरह से उचित ठहराया है कि वह समलैंगिक प्रथा से खुश नहीं था और अंत में, इसका न्याय किया गया। बाइबल क्या सिखाती है, इसके बारे में हम किसी भ्रम में नहीं रहना चाहते।

अब, हो सकता है कि आपको यह पसंद न आए, हो सकता है कि आप इसका पालन न करें, और यह आपका विशेषाधिकार है, लेकिन मैं केवल 1 तीमुथियुस 2 में जाना चाहता हूँ जो पुरुष और महिला में भगवान के अच्छे डिजाइन की पुष्टि करता है और अंतिम निर्णय में हम दोनों कितने बेहतर हैं लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में भी जब हम पुरुष और महिला के रूप में उसी तरह विकसित और विस्तारित होते हैं जिस तरह भगवान ने लोगों को बनाया है। तो, 1 तीमुथियुस 2, जैसा कि आप अपने एनआईवी में देखेंगे, पूरे अध्याय के लिए केवल एक ही शीर्षक है, पूजा पर निर्देश। पॉल कहते हैं, मैं आग्रह करता हूँ, और मुझे अपनी स्क्रीन को यहां केवल एक स्क्रीन पर वापस लाने दें, मैं आग्रह करता हूँ, सबसे पहले, सभी लोगों के लिए याचिकाएं, प्रार्थनाएं, हिमायत और धन्यवाद किया जाए।

लाल अक्षरों पर ध्यान दें, यह एक अनिवार्यता है, यह एक आदेश है। सबसे पहले, जब आप दुनिया के कुछ हिस्सों में जाते हैं, तो मुझे पता है कि अफ्रीका में चर्च के लिए एक शब्द प्रार्थना का घर है। और मेरा मानना है कि यीशु ने जॉन अध्याय 2 में भजन उद्धृत किया है। धर्मग्रंथ कहता है, मेरा घर सभी राष्ट्रों, सभी अन्यजातियों के लिए प्रार्थना का घर होगा।

इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर की पूजा करने के लिए सभी का स्वागत है। खैर, जब परमेश्वर के लोगों की सभा की बात आती है तो देहाती निर्देश का पहला बिंदु यह है कि यह एक प्रार्थना सभा हो। प्रार्थनाओं के लिए ये शब्द तकनीकी शब्द नहीं हैं जो एक-दूसरे को अलग करते हैं, कुछ ईश्वर की पुष्टि करने, ईश्वर को धन्यवाद देने, ईश्वर के लिए हस्तक्षेप करने, या ईश्वर से

चीजों के लिए पूछने की तर्ज पर हैं, बल्कि हर तरह की प्रार्थना है जिसे बाइबल वैध बनाती है, जो एक है विस्तृत श्रृंखला, वे चीजें सभी लोगों के लिए बनाई जानी चाहिए।

फिर वह एक उदाहरण देता है, राजाओं और उन सभी अधिकारियों के लिए, ताकि हम पूरी भक्ति और पवित्रता में शांतिपूर्ण और शांत जीवन जी सकें। मुझे नहीं लगता कि यही एकमात्र कारण है कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि हम ईश्वर से प्रेम करते हैं और हम ईश्वर के साथ संवाद करना पसंद करते हैं।

और यह ईश्वर की इच्छा है कि हम प्रार्थना के समय, प्रार्थना के मौसम में, प्रार्थना के जीवन में उसके साथ संवाद करें और एक-दूसरे के साथ संगति रखें। लेकिन तात्कालिक परिणामों में से एक यह है कि यदि ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं पर कृपा करता है, तो हम शांतिपूर्ण समाज में रह सकते हैं। और यदि हमारे शासक भ्रष्ट नहीं हैं, और जो हमारे ऊपर हैं वे हमें परेशान नहीं कर रहे हैं और चर्च पर अत्याचार नहीं कर रहे हैं, तो यह वास्तव में शालोम, शांति, समृद्धि के रोजमर्रा के जीवन के लिए अच्छा है।

हमारे लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि हम परमेश्वर की महिमा के लिए जी सकें और मसीह के शिष्यों के रूप में जी सकें, जो शिष्यों के रूप में बढ़ रहे हैं और जो शिष्य बना रहे हैं। यह अच्छा है। वहाँ फिर से वह शब्द है कलोस।

और यह हमारे उद्धारकर्ता, परमेश्वर को प्रसन्न करता है, जो चाहता है कि सभी लोग बचाए जाएं और सत्य का ज्ञान प्राप्त करें। क्योंकि ईश्वर एक है। अब, याद रखें कि पॉल तीमुथियुस और इफिसुस को लिख रहा था, और इफिसुस में सैकड़ों देवता थे।

प्रमुख संस्कृति बहुदेववादी थी। लेकिन पॉल इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि पुराना नियम क्या सिखाता है और यीशु क्या पुष्ट करता है। बस एक ही ईश्वर है।

एक ईश्वर है और एक मध्यस्थ है। हमें एक मध्यस्थ की आवश्यकता है क्योंकि हमने परमेश्वर का नियम तोड़ा है। हम ईश्वर से कट गये हैं।

लेकिन एक तरीका है जिससे हम ईश्वर के साथ अपना रिश्ता कायम कर सकते हैं। हमारी मध्यस्थता की जा सकती है और ईश्वर और मानव जाति के बीच वह मध्यस्थ मनुष्य, मसीह यीशु है, जिसने सभी के लिए या सभी लोगों के लिए छुड़ौती के रूप में स्वयं को दे दिया। और निःसंदेह यह क्रूस पर उनकी मृत्यु के बारे में बात कर रहा है।

ये अब सही समय पर देखने को मिला है। ग्रीक में यह अधिक पैतृक है, जिसने स्वयं को सभी के लिए फिरौती के रूप में दे दिया, उचित समय पर पैदा हुआ गवाह। यह बिल्कुल गलातियों 4 की तरह है, समय पूरा होने पर परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।

वहाँ एक जटिल दुनिया है और वहाँ मसीहाई भविष्यवाणियाँ थीं और बिल्कुल सही समय पर ईसा मसीह आए और ईसा मसीह की मृत्यु हो गई। और रोमियों में पौलुस कहता है, मसीह सही समय पर दुष्टों के लिये मरा। तो, यह बहुत, बहुत पॉलीन है।

ऐसा नहीं लगता कि कोई ऐसा व्यक्ति है जो पॉल को अच्छी तरह से नहीं जानता या जो उसके नाम पर कोई जालसाज़ लिख रहा है। और इस उद्देश्य के लिए, मुझे एक दूत और एक प्रेरित नियुक्त किया गया था। हेराल्ड वह व्यक्ति होता है जो एक घोषणा करता है, जैसे कि शहर का उद्घोषक।

और एक प्रेरित जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। मुझसे सच्चाई बयां की जा रही है। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।

और अन्यजातियों का सच्चा और विश्वासयोग्य शिक्षक। तो, कुछ अवलोकन। मैं पहले ही इसका संकेत दे चुका हूँ।

पूजा के केंद्र में प्रार्थना है। अब मैं प्रोटेस्टेंट हो गया हूँ और इसलिए प्रोटेस्टेंट परंपरा में हम उपदेश पर जोर देते हैं। और मुझे लगता है कि यह सही है।

मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर का वचन अनुग्रह का साधन है जो परमेश्वर के लोगों के लिए प्राथमिक है। विश्वास परमेश्वर के वचन सुनने और सुनाने से आता है। सुनो हे इस्राएल!

प्रभु हमारा परमेश्वर एक है। सुनना बहुत महत्वपूर्ण है और परमेश्वर का वचन हमारी कृपा का साधन है। इसलिए, यह सही है कि ईसाई पूजा परमेश्वर के लोगों को दिए गए वचन पर केंद्रित है जो हमें शुद्ध करता है, हमें निर्देश देता है और हमें प्रोत्साहित करता है।

लेकिन वचन के मंत्रालय का संदर्भ संगति के ईश्वर और उन लोगों के साथ संवाद है जो ईश्वर के वचन का प्रचार करते हैं। वचन के सेवक। आमतौर पर, तीमुथियुस जैसा पादरी मण्डली को शिक्षा दे रहा है और धिक्कार है उस मण्डली पर जिसके नेता प्रार्थनाहीन हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में साल-दर-साल होने वाले सर्वेक्षणों से पता चलता है कि मंत्री दिन में तीन मिनट या पाँच मिनट प्रार्थना करने में बिताते हैं। अक्सर बहुत अधिक प्रार्थनाएँ नहीं होतीं। खूब चर्चा हो रही है।

बहुत सारे व्याख्यान हैं। बहुत सारे उपदेश हैं। लेकिन प्रार्थना नहीं हो सकती।

और आप अच्छा कहते हैं कि जानकारी सामने आने से क्या फर्क पड़ता है? खैर, अंतर यह है कि परमेश्वर वचन को फलदायी बनाने के लिए लोगों के बीच मौजूद है। यीशु ने कहा जहां दो या दो से अधिक मेरे नाम पर इकट्ठे होंगे वहां मैं रहूंगा। और उसके नाम का अर्थ है उसकी अनुमति के तहत और उसकी उपस्थिति में।

यदि हम ईश्वर से प्रार्थना नहीं करते हैं, तो हम यह संकेत दे रहे हैं कि हमें वास्तव में व्यक्तिगत उपस्थिति की आवश्यकता नहीं है। हमें बस यह जानकारी चाहिए। लेकिन जानकारी के फलदायी होने के लिए हमें ईश्वर की उपस्थिति की आवश्यकता है।

तो, पूजा के केंद्र में प्रार्थना है। इस अर्थ में, अध्याय 2 में पूजा के बारे में जो कुछ भी निर्देश दिया गया है, वह सब इस बात पर केंद्रित है कि यह एक प्रार्थना सभा है या नहीं। लोग अध्याय 2 के अंत में चीजों के बारे में मोलभाव करते हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है: क्या लोगों की उनके अनुबंधित ईश्वर पर निर्भरता और उसके साथ उनके रिश्ते के माध्यम से ईश्वरीय उपस्थिति है?

दूसरे, ईश्वर सत्य के ज्ञान के प्रसार के लिए एक व्यवस्थित विश्व का पक्षधर है। जैसे-जैसे सत्य का ज्ञान फैलता है लोग मसीह में विश्वास का इज़हार करते हैं। वे अपने पापों से फिरते हैं।

वे अपने पुराने जीवन से फिर जाते हैं। वे मसीह की ओर मुड़ते हैं और यह विशेष अनुग्रह है। यह बचत का अनुग्रह है।

लेकिन हम सामान्य अनुग्रह की बात करते हैं। हम ईश्वर के बारे में बात करते हैं जो न्यायी और अन्यायी दोनों पर वर्षा कराता है। भगवान सभी लोगों के लिए अच्छा है।

और इसलिए, जब एक व्यवस्थित दुनिया होती है तो उस व्यवस्था के पीछे भगवान होता है। मसीह इस मुक्ति का एकमात्र सूत्रधार है। कभी-कभी बाइबल कहती है कि ईसा मसीह सभी लोगों के लिए मरे और ऐसा यहाँ भी कहा गया है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लोग बचा लिये जायेंगे। इसका मतलब यह है कि मसीह ने उन सभी के लिए एकमात्र छुड़ौती दी जो उस समय विश्वास करते थे और उन सभी के लिए जो अब विश्वास करते हैं। और पुराने नियम के सभी संतों के लिए, जिन्होंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर के वादे पर अपनी आशा रखी थी कि वह उनके प्रति उनके विश्वास को सही ठहराने के लिए कुछ करेगा, जैसे उन्होंने इब्राहीम को न्यायसंगत ठहराया था।

यह सब आने वाले मसीह में विश्वास के माध्यम से था। वे विवरण नहीं जानते थे लेकिन वे परमेश्वर और उसकी निष्ठा के बारे में व्यापक रूप से जानते थे। अध्याय 4 श्लोक 1 का 10 तीमुथियुस कहता है, हम इसी कारण परिश्रम और प्रयत्न करते हैं, क्योंकि हम ने जीवित परमेश्वर पर आशा रखी है, जो सब लोगों का और विशेष करके विश्वास करनेवालों का उद्धारकर्ता है।

तो, भगवान एक उद्धारकर्ता है क्योंकि उसकी सामान्य कृपा हर किसी के लिए एक निश्चित स्तर की शालोम लाती है। आप जानते हैं कि सूर्योदय पसंद है और मिट्टी पसंद है और जीने के लिए बुनियादी भोजन और साधन पसंद हैं। लेकिन मसीह की फिरौती, जबकि मुझे लगता है कि यह सामान्य अनुग्रह को निधि देता है, मसीह की फिरौती विशेष रूप से उन लोगों के उद्धार के लिए है जो विश्वास करते हैं और वह मध्यस्थ है, मानवता के उस उपसमूह के लिए एकमात्र मध्यस्थ है।

चौथा, या तीसरा क्षमा करें, पॉल पर स्पष्ट रूप से झूठ बोलने का आरोप लगाया गया था। वह उस श्लोक में क्यों कहते हैं, मैं तुमसे सच कह रहा हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। ठीक है, अगर मैं सही हूँ तो टिमोथी को कुछ यहूदी विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

वह पढ़ा रहा है, उसे कानून के शिक्षकों का सामना करना पड़ रहा है जो नहीं जानते कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। यह अवश्यंभावी है कि वे पॉल का विरोध करेंगे क्योंकि अधिनियमों की

पुस्तक में हम जो कुछ भी जानते हैं वह न केवल पॉल के बारे में है बल्कि पीटर तक भी जाता है। जब पतरस ने कुरनेलियुस नाम के उस रोमन सूबेदार और उसके दोस्तों के साथ सुसमाचार साझा किया और उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ, तो यरूशलेम के लोग, यरूशलेम के यहूदी विश्वासी, आनन्दित नहीं हुए, लेकिन उन्होंने पतरस को कालीन पर बुलाया और कहा कि तुम उसके साथ कैसे खा सकते हो, आप खतनारहित अन्यजातियों को कैसे बपतिस्मा दे सकते हैं? यह उनके लिए घृणास्पद था क्योंकि उन्हें लगा कि आपको बचाने के लिए उनकी विरासत की जातीयता के साथ जुड़ने के लिए हर संभव प्रयास करने की ज़रूरत है और सभी प्रकार से यीशु और फिर भगवान दोनों को जोप्पा में पीटर को अपने दर्शन के माध्यम से बचाया जाना चाहिए। जानवर चादर पर नीचे आ रहे हैं।

भगवान एक तरह से गियर बदल रहे थे या आप कह सकते हैं कि मुक्ति की सिम्फनी में एक महत्वपूर्ण मॉड्यूलेशन कर रहे थे और वह कह रहे थे कि हम यरूशलेम मंदिर-केंद्रित प्रकाश से राष्ट्रों के लिए प्रकाश की ओर बढ़ रहे हैं जो लोगों में केंद्रित होने जा रहा है। यह पोर्टेबल होगा. मेरे लोग जो हमेशा दुनिया में रोशनी लेकर आए हैं, योना अपने साथ जहाज पर उन बुतपरस्तों के लिए रोशनी लेकर आया।

उसने अपने परमेश्वर की गवाही दी। यह हमेशा से ऐसा ही मामला रहा है, लेकिन इसे यीशु के आदेश और चर्च के गैर-यहूदी दुनिया में जाने के साथ संस्थागत रूप दिया गया था और इसलिए, मुझे यकीन है, इन यहूदी शिक्षकों की ओर से इन मसीहा यहूदियों और चर्चों के खिलाफ बहुत दबाव था। यीशु के नाम पर स्थापित. वे उसे विफल करना चाहते थे और उसे पीछे धकेलना चाहते थे और उन्हें पॉल का विरोध करने की ज़रूरत थी और उन्हें पॉल को बदनाम करने की ज़रूरत थी और हम इसे पॉल के सभी पत्रों में देखते हैं कि यह विरोध सामने आता है और हम इसे अधिनियमों में देखते हैं।

एक आधुनिक रणनीति है कि जब संस्कृति आपका विरोध करेगी तो अपना संदेश बदल देगी ताकि संस्कृति आपका विरोध न करे। मैंने कुछ मिनटों के लिए समलैंगिकता का उल्लेख किया और कई चर्चों ने निर्णय लिया कि हमें नहीं लगता कि यह गलत है क्योंकि हमारी संस्कृति इसका विरोध करती है। लेकिन पॉल ने अपना संदेश नहीं बदला.

उन्होंने ऐसा नहीं कहा, और यदि आप इसके बारे में पढ़ना चाहते हैं तो यह अधिनियम 15 पर वापस जाता है, जेम्स और पीटर और बरनबास और पॉल और जेरूसलम के चर्च ने कहा कि हम जो देखते हैं वह सुसमाचार संदेश नहीं है। सुसमाचार का उद्धार जातीयता के बारे में नहीं है। सुसमाचार का उद्धार इब्राहीम, इसहाक और याकूब के ईश्वर में ईश्वर के वादे और विश्वास के बारे में है, जिन्होंने अपने मसीहा यीशु को पाप के लिए फिरौती देने के लिए भेजा था, जो मृतकों में से जी उठे थे, जिन्हें चर्च और उसके ऊपर शासन करते हुए पुनरुत्थान में ईश्वर द्वारा पुष्टि की गई थी। दुनिया।

इसलिए, पॉल सांस्कृतिक अपेक्षा के अनुरूप अपना संदेश नहीं बदलता है। अब सार्वजनिक पूजा के निर्देश जारी हैं और मुझे पता है कि कुछ टिप्पणीकार हैं जो कहते हैं कि यह सार्वजनिक पूजा के बारे में नहीं है बल्कि यह सिर्फ विचारों का विभाजन है। मुझे लगता है कि ज्यादातर

टिप्पणीकार ऐसा सोचते हैं और इस पर ज्यादा बहस किए बिना मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि हमारे पास यहां मण्डली में की जा रही प्रार्थनाओं की एक तस्वीर है और अब हर जगह पुरुष प्रार्थना कर रहे हैं और मुझे लगता है कि यह बात हो रही है हर शहर में चर्च, जहां भी ईसाई मंडलियां हैं, वहां प्रार्थना होनी चाहिए और जब आप प्रार्थना करने के लिए अपने हाथ उठाते हैं तो यह कहता है कि लोगों को क्रोध या विवाद के बिना पवित्र हाथ उठाना है।

तो, यह एक वास्तविक आदेश है, यह आदेश व्याकरणिक मोड में नहीं है, लेकिन जब वह कहता है कि मैं चाहता हूं कि लोग प्रार्थना करें तो वह कह रहा है कि टिमोथी सुनिश्चित करें कि आप ऐसा होने के लिए जगह बनाएं। मैं यह भी चाहता हूं कि महिलाएं शालीनता और शालीनता के साथ शालीन कपड़े पहनें, न कि लंबे बालों या सोने या मोतियों या महंगे कपड़ों से बल्कि अच्छे कर्मों से खुद को सजाएं जो उन महिलाओं के लिए उपयुक्त हों जो भगवान की पूजा करने का दावा करती हैं। और वह जारी रखते हैं कि एक महिला को शांति और पूर्ण समर्पण से सीखना चाहिए।

दरअसल, यहां व्याकरणिक रूप का अधिक सही अनुवाद किया जाएगा और कई अनुवाद इसे इस तरह से लेते हैं कि एक महिला को सीखने दें। जिस तरह से इसे एनआईवी में रखा गया है, यह अधिक पॉल का प्रत्यक्ष अवलोकन है कि महिलाओं को क्या करना चाहिए, लेकिन व्याकरणिक रूप में यह एक तीसरे व्यक्ति की अनिवार्यता है और वह टिमोथी से कह रहा है, टिमोथी एक महिला को सीखने दें। तो, यह एक भारी-भरकम पॉल नहीं है जो वह सोचता है कि महिलाओं को क्या करना चाहिए, यह कहना है कि महिलाएं शिष्य हैं और एक पादरी के रूप में तीमुथियुस आपकी ज़िम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि यह शांति और पूर्ण समर्पण में हो।

मैं किसी महिला को यह सिखाने या अधिकार ग्रहण करने की अनुमति नहीं देता कि मान शब्द विवादास्पद है, इसका मतलब सिर्फ अधिकार का प्रयोग करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि ऊपर उठने के लिए अधिकार छीन लिया जाए, इसका मतलब सिर्फ यह है कि उसे व्यायाम नहीं करना चाहिए और मैं यह समझूंगा कि एक पादरी के रूप में किसी व्यक्ति पर अधिकार का प्रयोग करना क्या अधिकार है जैसा कि वह पहले ही कह चुका है कि टिमोथी आपको अपने में कुछ अधिकार का प्रयोग करने की आवश्यकता है मण्डली। वह कहता है कि मैं किसी महिला को वह भूमिका निभाने की इजाजत नहीं देता, जिसके लिए उसे चुप रहने की जरूरत है, उसे चुप रहना चाहिए ताकि वह सीख सके और फिर वह कारण बताता है कि एडम ने पहले शपथ ली थी, फिर ईव ने और एडम ने धोखा नहीं दिया था, वह महिला थी जिसने धोखा दिया था धोखा दिया गया और पापी बन गई, लेकिन महिलाएं बच्चे पैदा करने के माध्यम से बच जाएंगी यदि वे धर्म के साथ प्रेम और पवित्रता में विश्वास बनाए रखें।

अब श्लोक आठ और नौ में सबसे पहले पुरुषों के पवित्र हाथ उठाने और महिलाओं की पोशाक, सही रवैया और व्यवहार के बारे में कुछ अवलोकन ईश्वरीय पूजा के लिए और पूरे जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि हम एक तरह से जीते हैं और फिर ईसाई पूजा सेवा में आते हैं और एक अलग चेहरा धारण करते हैं तो हम सबसे खराब प्रकार के पाखंडी हैं। हम गुस्सैल ब्लॉगर हैं या हम भड़कीले कपड़े पहनने वाले हैं, लेकिन फिर जब हम चर्च आते हैं तो हम वास्तव में सीधे दिखते हैं। इसे पाखंड कहते हैं। इसलिए, पॉल चाहता है कि वहाँ परमेश्वर के लोगों की एक प्रार्थना सभा हो और लोगों का रवैया सही हो। आम तौर पर पुरुष अपना वजन इधर-उधर फेंकना पसंद करते

हैं, वहां शांत पुरुष होते हैं और शांत पुरुष नहीं होते हैं, लेकिन बहुत सारे पुरुष होते हैं, जिनमें चीजों के बारे में मजबूत भावनाएं होती हैं। यह गुस्से के रूप में सामने आता है। बहुत से पुरुषों में गुस्सा, रोड रेज होता है, महिला की तुलना में पुरुष होने की संभावना बहुत अधिक होती है। मैंने वर्षों से देखा है कि सैद्धांतिक बहसों में पुरुषों को बहस करना पसंद है और पुरुषों को लड़ना और जीतना पसंद है। मुझे लगता है कि आप इसे टीम खेलों में भी देखते हैं। महिलाएं अक्सर अधिक सहयोगी होती हैं और मेरा मतलब है कि वे टीमों के रूप में प्रतिस्पर्धी हैं लेकिन आप जानते हैं कि उन्हें एक साथ काम करना और एक-दूसरे की पुष्टि करना पसंद है। पुरुष ऐसे हों या न हों लेकिन पुरुषों को आवेश में आना और आवेश में कुछ भी करना बहुत अच्छा आता है। यदि आपके पास क्रोधी व्यक्ति हैं तो आप पूजा नहीं कर सकते। तो आइए इस बात पर जोर दें कि मैं चाहता हूं कि पुरुष बिना क्रोध या विवाद के पवित्र हाथ उठाकर प्रार्थना करें।

अब यह एक वास्तविक चुनौती है क्योंकि एक ओर, तीमुथियुस को बताया गया है कि उसे विवाद करना होगा, इसलिए बोलने के लिए, उसे ईश्वर की दृष्टि में जो सत्य और सही है उसके लिए खड़ा होना होगा। उसे सुसमाचार की वैधता के लिए खड़ा होना होगा। उसे कुछ लोगों का विरोध करना होगा लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि तीमुथियुस नाराज होगा या तीमुथियुस विवाद करेगा। इसका अर्थ यह है कि तीमुथियुस सिखाता है कि सत्य क्या है। आप बाद में देखेंगे, कि वह तीमुथियुस से धैर्य रखने और स्वीकार करने का आग्रह करेगा और आप कह सकते हैं कि यह एक प्रकार का क्रमिक दृष्टिकोण है। बस हैंडल से बाहर न निकलें और लोगों की निंदा न करें, लोगों को अपनी गलती से मुड़ने और भगवान की ओर मुड़ने का मौका दें। लेकिन इसके लिए परिपक्वता की आवश्यकता होती है, इसके लिए ईश्वर पर विश्वास की आवश्यकता होती है। इसमें क्रूस पर चढ़ाने की आवश्यकता होती है जिसे कम से कम मैं एक आदमी के रूप में अच्छी तरह से जानता हूं और वह है आक्रोश की भावना जिसे शामिल करना बहुत स्वादिष्ट हो सकता है। यह आपको इतना धार्मिक महसूस करा सकता है लेकिन फिर आप पीछे मुड़कर देखते हैं और आपको याद आता है कि बाइबल कहती है कि मनुष्य का क्रोध ईश्वर की धार्मिकता को प्राप्त नहीं करता है।

यह आश्चर्यजनक है कि धर्म क्रोध से कितना प्रेरित होता है। क्रोध आत्मा का फल नहीं है। क्योंकि आत्मा प्रेम, आनन्द, शान्ति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वास, उदार आत्म-संयम है। वहां कोई गुस्सा नहीं है। यदि ईश्वर मौजूद है तो मनुष्य का क्रोध बहुत हद तक नियंत्रित हो जायेगा।

इसलिए सुसमाचार न केवल बड़ी विशेषताओं में प्रतिसांस्कृतिक है, जैसे कि यहूदी दृष्टिकोण कि मुक्ति जातीयता के माध्यम से होती है या आधुनिक दृष्टिकोण कि समलैंगिकता, उदाहरण के लिए, या यौन अनैतिकता ठीक है। लेकिन जब कुछ परिवारों में व्यक्तियों की प्रवृत्ति की बात आती है तो सुसमाचार प्रतिसांस्कृतिक होता है, ऐसा माना जाता है कि उसका स्वभाव वास्तव में बुरा है। वह बचपन से ही ऐसा ही है। खैर, मुझे खेद है क्योंकि आप बचपन से ही ऐसे थे, इसका मतलब यह नहीं है कि यह अच्छी बात है या भगवान आपके व्यवहार से इसे मिटा नहीं सकता।

जिस प्रकार पुरुषों में विशिष्ट कुसमायोजन होता है उसी प्रकार महिलाएं भी इस बात को लेकर चिंतित रहती हैं कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं। अक्सर पुरुष काम पर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं या फिर तैयार हो जाते हैं। इसमें उन्हें 10 मिनट लगते हैं और वे कभी दर्पण की ओर

नहीं देखते। शायद उन्हें ऐसा करना चाहिए, लेकिन वे ऐसा नहीं करते। मैं यहां रूढ़िबद्ध धारणा बनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूं, मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि मुझे लगता है कि यह बहुत आम बात है कि महिलाएं अपने बालों और शायद मेकअप के साथ बहुत समय बिताती हैं। वे अपनी शक्ल-सूरत को लेकर अधिक चिंतित रहते हैं और यह कोई बुरी बात नहीं है। दिखावे के बारे में चिंतित होना बुरा नहीं है और आप इन्हें ऐसे नहीं पढ़ते हैं जैसे कि पॉल कह रहा हो कि आपके पास विस्तृत केश नहीं हो सकते, आपके पास सोना नहीं हो सकता, आपके पास मोती नहीं हो सकते, आपके पास महंगे कपड़े नहीं हो सकते। यह शब्दों का अर्थ नहीं है।

वह जो कह रहे हैं वह यह है कि यदि ये चीजें महिलाओं के लिए पुरुषों के लिए क्रोध की तरह बन जाती हैं तो वे क्रोध को धारण कर लेते हैं और इसे सीधे चर्च में ले आते हैं, यदि पहनावा सभ्य नहीं है और यह उचित नहीं है, तो यह आकर्षक है और यह सांस्कृतिक पैटर्न के साथ फिट बैठता है। ईश्वरीय नहीं, यह उन महिलाओं के अनुरूप नहीं है जो ईश्वर की पूजा करने का दावा करती हैं। यदि आप ईश्वर की आराधना करते हैं, यदि आप पुरुष हैं तो यह आपके क्रोध को कम कर देगा। यदि आप एक महिला हैं तो भगवान की पूजा करती हैं, यह इस बात पर प्रतिबिंबित होता है कि लोग जो देखते हैं उसके संदर्भ में आप खुद को कैसे पेश करते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि ये चीजें काफी हद तक स्व-स्पष्ट हैं। मैं दुनिया की सभी संस्कृतियों में नहीं गया हूं और मैं मानवविज्ञानी नहीं हूं, लेकिन मैंने बहुत अलग संस्कृतियों में बहुत अलग आर्थिक स्तर, अलग-अलग भाषाएं, अलग-अलग नस्लें, अलग-अलग महाद्वीपों में देखा है कि महिलाएं आमतौर पर सुंदर दिखना पसंद करती हैं और वे सुंदर हैं। मुझे लगता है कि बाइबल भी नारीत्व की सुंदरता की पुष्टि करती है। इसलिए नारीत्व विभिन्न रूप लेता है, आप छोटे बाल या लंबे बाल या इस प्रकार के कपड़े ले सकते हैं या यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहाँ हैं, और वर्ष का कौन सा समय है। लेकिन यह एक वाजिब चिंता है कि महिलाएं अच्छी दिखने की कोशिश करेंगी और पुरुष गुस्से के जरिए अपना धर्म निभाने की कोशिश करेंगे। पॉल चाहता है कि इसकी जांच हो।

इसके अलावा, महिलाओं की बात करें तो, महिलाओं को सीखने की जरूरत उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पुरुषों की। अब इससे पहले कि आप श्लोक 12 तक पहुँचें, यहाँ एक बड़ी बाधा है और मैं इसके लिए पश्चिमी चर्च को दोष देने जा रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि पश्चिमी चर्च ने यह स्थापित करने में अच्छा काम किया है कि मसीह में विश्वास करने वाले की प्राथमिक भूमिका और पहचान एक शिष्य होना है। एक शिष्य एक शिष्य या शिक्षार्थी होता है। मुझे लगता है कि कुछ परंपराओं में, विशेष रूप से धार्मिक परंपराओं में, एक ईसाई वह व्यक्ति होता है जो चर्च में आता है और उन चीजों को देखता और कहता है जो कहने के लिए मुद्रित की जाती हैं या जिन्हें कहने के लिए प्रक्षेपित किया जाता है या जिन्हें आपने याद कर लिया है। और आप कहते हैं और आप पूजा के तमाशे का हिस्सा हैं। वह चर्च है। चर्च पूजा करने वाले लोग हैं।

अब मैं पूरी तरह से पूजा के पक्ष में हूँ, मुझे खुद पूजा-पाठ पसंद है, लेकिन मुझे यशायाह 1 और 2 की याद आती है, जहाँ पुराने नियम में पूजा का सबसे सुंदर वर्णन है, लेकिन भगवान कहते हैं कि इसमें बदबू आती है। धार्मिक सौंदर्य तुरंत ईश्वर की महिमा के लिए वाचा संबंधी गतिविधि में परिवर्तित नहीं होता है क्योंकि यह कई मायनों में दिवालिया हो सकता है। कोई भी पूजा जो उन

लोगों द्वारा की जाती है जो शिष्य नहीं हैं, वह ईश्वर की मंशा से कम है। परमेश्वर चाहता है कि आराधना में हर कोई सुनने वाला हो और ये शब्द जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ वे तुम्हारे हृदय में रहें और तुम उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। व्यवस्थाविवरण 6 में यह पुराने नियम का दर्शन है कि परमेश्वर के लोग उसके वचन को सुनते हैं और उसे अन्य पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं।

हम 2 तीमुथियुस 2 में देखने जा रहे हैं, तीमुथियुस जो मैं तुम्हें सिखा रहा हूँ, तुम विश्वासयोग्य लोगों को सौंपो जो इसे दूसरों को सौंप सकते हैं। परमेश्वर के लोगों की मुख्य पहचान परमेश्वर के वचन को सुनना, परमेश्वर के वचन पर प्रतिक्रिया देना, एक साथ प्रार्थना करना, एक साथ पूजा करना, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है। ईसाई होने के लिए सुनने और सीखने से बढ़कर कुछ भी नहीं है। जेम्स कहते हैं कि प्रत्यारोपित शब्द को प्राप्त करें जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है। यदि मुख्य रूप से हम केवल अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए और केवल तमाशा का हिस्सा बनने के लिए चर्च जाते हैं, चाहे वह कम तमाशा हो या उच्च तमाशा, तो हम शिष्य नहीं हो सकते। हो सकता है कि हम केवल भागीदार हों या अन्य लोगों ने ईसाई धर्म को किसी प्रकार की सक्रियता तक सीमित कर दिया हो।

यह आवश्यक है कि चर्च गरीबों की देखभाल करे। यह आवश्यक है कि चर्च दुनिया में न्याय के लिए अनुकूल सामाजिक परिस्थितियों के लिए काम करे। लेकिन अगर हम शिष्य नहीं हैं तो हम यीशु के नाम पर सिर्फ कार्यकर्ता हैं। हो सकता है कि हम यीशु का नाम व्यर्थ ही ले रहे हों क्योंकि यह पाखंड है कि हम ईश्वर की इच्छानुसार जीवन जी रहे हैं, लेकिन ईश्वर के साथ व्यक्तिगत हृदय संबंध नहीं रख रहे हैं, ताकि हम ईश्वर के वचन से पोषित हो सकें और वास्तव में ईश्वर की आत्मा से संचालित हो सकें।

अब इस संदर्भ में यह सब क्रांतिकारी क्यों है क्योंकि यहूदी धर्म का लोकाचार बहुत अधिक शिष्य था, लेकिन मानव स्वभाव के कारण टोरा सीखने का ध्यान पुरुषों पर था, न कि भगवान के शब्द के कारण क्योंकि भगवान का शब्द महिलाओं की आलोचना नहीं करता है। . पुरुषों के पास ईश्वर की अच्छी चीजों को लेने और उसे अपने लाभ के लिए बदलने के तरीके हैं, न कि अपनी पत्नियों से प्यार करना, और न ही अपनी पत्नियों के साथ शालोम के लिए ईश्वर के प्रावधानों को साझा करना, जैसा कि वे कर सकते थे।

इसलिए, पॉल चाहता है कि तीमुथियुस महिलाओं को गंभीरता से न लेने की इस यहूदी प्रवृत्ति का प्रतिकार करे। एक महिला को शांति और पूर्ण समर्पण से सीखने दें।

अब वह वहाँ क्यों है? हमारे पास विवरण नहीं है, लेकिन एक संभावना यह है कि वहाँ अनौपचारिकता थी, बातचीत थी, पूजा-पाठ वाले माहौल का अभाव था और पॉल चाहते हैं कि महिलाएं सीखें। वह नहीं चाहता कि लोग एक-दूसरे से बात करें, नोट्स लिखें, या पीछे बैठकर शोर करें। महिलाओं को सीखने वालों के रूप में खुद को गंभीरता से लेने की जरूरत है और चर्च ने हमेशा ऐसा अच्छा नहीं किया है।

कई महिलाओं को खुद को गंभीरता से लेने में परेशानी होने का एक कारण सीखना है क्योंकि बहुत सारे उपदेश बहुत कुछ नहीं सिखाते हैं। मेरे पास बहुत सी महिलाएँ हैं जो पढ़ती हैं और वे

बहुत संवाद करती हैं और उनका बातचीत करने का दिमाग बहुत सक्रिय है। यदि आप ऐसे उपदेश पर कड़ी मेहनत करते हैं जिसमें बहुत सारी जानकारी होती है और वह कहीं जाता है और निर्देश देता है, तो मैंने पाया है कि बहुत सी महिलाएं सीखना पसंद करती हैं। लेकिन वे चर्च में निराश हो जाते हैं क्योंकि पादरी अक्सर बहुत कुछ नहीं सिखाते हैं। वे बस अलग-अलग पैकेजों में सामान दोहराते हैं। इसलिए, महिलाएं सीखना छोड़ देती हैं।

अब मुझे नहीं लगता कि टिमोथी एक आलसी शिक्षक था, लेकिन मुझे लगता है कि उसे उस लोकाचार के खिलाफ काम करना पड़ा जिसमें बुतपरस्त धर्म शिष्य धर्म नहीं थे। वे शास्त्र धर्म नहीं थे। यदि ये महिलाएँ चर्च में आती हैं और वे या तो केवल व्यावहारिक नागरिक धर्म से आती हैं, या यदि वे विभिन्न पंथों की भक्त होती हैं, तो वे वे लोग नहीं होतीं जिन्होंने धर्मग्रंथों को सुना या धर्मग्रंथों का अध्ययन किया और चीजें सीखीं और इस संदेश, इस अच्छी खबर को आगे बढ़ाया, दूसरों को बचाने के लिए। वह बुतपरस्त धर्म नहीं था।

इसलिए, यदि आपके पास चर्च में शिष्य बनाने वालों के रूप में सक्रिय महिलाएं नहीं हैं तो आपका चर्च कमजोर होगा। तो वहीं इसका इस्तेमाल अक्सर महिलाओं को नीचा दिखाने के लिए किया जाता है। दरअसल ये महिलाओं को बढ़ावा देना है। स्त्रियाँ भी उतनी ही शिष्या हैं जितनी पुरुष।

तो यह श्लोक 11 है। और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है और मुझे लगता है कि मैंने टिप्पणी में इस पर कई पन्ने लिखे हैं, लेकिन हम यहां यह सब नहीं बता सकते।

पद 12 के संबंध में, जहां पॉल कहता है, “मैं किसी स्त्री को किसी पुरुष को पढ़ाने या उस पर अधिकार रखने की अनुमति नहीं देता; उसे चुप रहना चाहिए।” फिर, यह नहीं कहता कि उसे होना ही चाहिए, यह कहता है, उसे चुप रहने दो। अपनी टिप्पणी में, मैं टिप्पणी करता हूँ कि यह चुप रहने के आदेश की तरह नहीं है और मौन शब्द का मतलब यह नहीं है कि वह कभी बात नहीं कर सकती। इसका मतलब है कि उसे शांति की जरूरत है और उसे सीखने की मुद्रा में रहने की जरूरत है। यदि आप बात कर रहे हैं तो आप सीख नहीं सकते। अगर आपके आसपास कोई रैकेट चल रहा है तो आप सीख नहीं सकते।

तो, पूजा की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जिसमें एक महिला को ऐसा माहौल मिले जो उसकी शिक्षा के लिए अनुकूल हो।

अब जहां तक संक्षेप में बोलने की अनुमति न देने की बात है। यह एक ऐसा शब्द है जिसे पॉल अन्य स्थानों पर अक्सर उपयोग करता है और मूल रूप से, यह एक आदेश की तरह है। यह शुरूआती चर्च की एक नीति मात्र है और मैं एक मिनट में इस पर टिप्पणी करूंगा। इस पद में पॉल जो कह रहा है वह यह है कि महिलाओं को सामूहिक निर्देश के कर्तव्य से मुक्त कर दिया गया है जो कि शिक्षण है।

अब सभी शिक्षण नहीं हो रहे हैं क्योंकि टाइटस 2 कहता है कि महिलाओं को विशेष रूप से अन्य महिलाओं को पढ़ाना चाहिए और दुनिया में महिलाएं सभी प्रकार से शिक्षाप्रद हैं। यदि आप

आपके संपर्क में हैं, तो क्षमा करें, यदि आप एक व्यवसायी महिला हैं, या यदि आप एक शिक्षक हैं, या यदि आप एक स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता हैं, या आप कानून प्रवर्तन हैं, या आप सैन्य हैं जहाँ भी महिलाएँ हैं जाओ वे मसीह की गवाही ले जा रहे हैं। उस अर्थ में वे अन्य लोगों को निर्देश दे रहे हैं।

लेकिन सप्ताह में एक या दो घंटे के लिए, भगवान के लोग सभा में एक साथ आते हैं और उस घंटे या दो घंटे महिलाओं को मंडली निर्देश या आध्यात्मिक निरीक्षण का काम नहीं सौंपा जाता है। व्यायाम प्राधिकार के इस शब्द को मैं इसी के बारे में बात करने के लिए लेता हूँ। मैं देहाती देखभाल के दो ध्रुवों के बारे में बात करता हूँ जिनका प्रयोग यीशु ने किया था। जब यीशु आये, तो उन्होंने शिक्षा दी, और उन्होंने चरवाही की। उनकी शिक्षा चरवाही का हिस्सा थी लेकिन उनकी चरवाही में नेतृत्व भी शामिल था। यह दृष्टि डाल रहा था। यह इसके लिए प्रार्थना कर रहा था, यह धैर्य रख रहा था, यह इसकी रक्षा कर रहा था। ये सभी निरीक्षण कार्य हैं। उन्होंने सवाल पूछे कि उन्होंने लोगों को चौंका दिया, आप क्या सोचते हैं, लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ। यह उनके अनुयायियों को उनकी समझ और उनके प्रति उनकी प्रतिबद्धता में आगे बढ़ने में मदद करने का एक तरीका था।

भगवान ने, यीशु के माध्यम से, महान चरवाहे के चरवाहों के अधीन काम सौंपा और ठीक उसी तरह जैसे यीशु ने मण्डली के पादरियों को सिखाया और निरीक्षण किया। इब्रानियों 13 कहता है कि अपने अगुवों की आज्ञा मानो उन लोगों की मानो जो तुम्हारे ऊपर नियुक्त किए गए हैं और वे तुम्हारी आत्मा के लिए उत्तर देंगे। प्रेरितों के काम 14:23 कहता है कि चर्चों की स्थापना के बाद उन्होंने हर मंडली में प्राचीनों को नियुक्त किया। इफिसस में, नए नियम के अन्य चर्चों की तरह, महिलाएं पॉल की तरह या बारह की तरह प्रेरित नहीं थीं।

यह तर्क कि यीशु महिला प्रेरितों को नियुक्त नहीं कर सकते थे क्योंकि यह प्रतिसांस्कृतिक था, मुझे नहीं लगता कि उस तर्क के लिए कुछ भी कहना है। यीशु उस समय संस्कृति से बंधे नहीं थे और वे सामूहिक पादरी के रूप में प्रकट नहीं होते थे। यह पुराने नियम के नेतृत्व पैटर्न के अनुरूप है। चर्च और घर में भी इसे ईडन के परिणाम के रूप में विस्तारित करें।

यह हमें श्लोक 13 14 और 15 में ले जाता है जिसके बारे में बहुत विवाद है लेकिन मैं इसे कैसे पढ़ता हूँ इसका सारांश बताऊंगा। सामूहिक नेतृत्व में श्रम का विभाजन होता है, वास्तव में बंधन क्या है, इस पर हम बहस कर सकते हैं लेकिन पद 13 के शब्दों से कोई सवाल नहीं है "क्योंकि आदम का गठन हव्वा से पहले किया गया था और आदम वह नहीं था जिसे धोखा दिया गया था।" मेरा मानना है कि इसे सबसे पहले धोखा समझा जाना चाहिए। "परन्तु वह स्त्री ही धोखा खा गई और पापी बन गई।" मुझे लगता है कि उन दोनों को धोखा दिया गया था लेकिन मुझे लगता है कि वह यहां ऑर्डर के बारे में बात कर रहे हैं।

परिणामस्वरूप, यह कहना अटकलबाजी होगी कि यदि आदमी नहीं गिरा होता तो चर्च कैसा दिखता। मेरा मतलब है कि यह शुद्ध अटकलें हैं कि हमें चर्च की आवश्यकता नहीं होगी। हर कोई, हर पति और पत्नी मिलकर, अपना स्वयं का चर्च हो सकते हैं।

मैं नहीं जानता लेकिन हम जो जानते हैं वह यह है कि गिरावट हुई थी और पॉल यहां कहते हैं कि गिरावट के कारण श्रम का विभाजन होता है। अब श्रम का वह विभाजन सृजन आदेश में पहले से ही अंतर्निहित था। मुझे लगता है कि पश्चिमी चर्च यह भूल गया है कि ईश्वर ने मानव जाति को अपनी छवि में बनाया है। जब यह इसे दो बार कहता है, तो यह ईश्वर की छवि में विस्मयादिबोधक बिंदुओं की तरह होता है, जिसे उसने बनाया है। यह अच्छी कविता है लेकिन इसे दो बार भी कहा गया है और जब इब्रानियों ने दो बार कुछ कहा तो यह बहुत महत्वपूर्ण था। नर और नारी, उसने उन्हें बनाया। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी और कहा, फूलो-फलो, और बढ़ जाओ, वा पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो, और समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और भूमि पर रेंगनेवाले सब जीवित प्राणियों पर प्रभुता करो। वे दूसरे व्यक्ति अनिवार्यताएं हैं, दूसरे व्यक्ति बहुवचन अनिवार्यताएं हैं, और आप देख सकते हैं कि पुरुषों और महिलाओं को इस जनादेश द्वारा समान रूप से दावा किया जाता है।

महिलाओं की मुक्ति सुनिश्चित है, मुझे लगता है कि "महिलाएं बचाई जाएंगी" युगांतशास्त्रीय है कि आखिरी दिन उन्हें उसी तरह बचाया जाएगा जैसे आखिरी दिन पुरुषों को हमारे पूर्वजों और मां आदम और हव्वा के पाप में शामिल होने के बावजूद बचाया जाएगा।

फिर हम कितने बड़े पैमाने पर सज़ा के पात्र होंगे, हम सभी को अंतिम दिन में मुक्ति की आशा है क्योंकि मसीह ने यह माना है कि हम सुसमाचार को आत्मसात करते हैं और अपनी ईश्वर-निर्मित पहचान के लिए उपयुक्त तरीकों से मसीह में विश्वास करते हैं।

अब हम ऐसे समय में रह रहे हैं, कम से कम दुनिया के अधिकांश हिस्सों में और पश्चिम में, जहां लिंग पर युद्ध की घोषणा हो चुकी है। मानव जाति पुरुष और महिला के विचार और इसकी मानकता के खिलाफ विद्रोह कर रही है। फिर, मैंने उल्लेख किया कि साल्ज़बर्ग घोषणापत्र मनुष्य की पारिस्थितिकी के बारे में बात करता है और अगर यह पुरुष और महिला की आदर्शता को दूर करने की दिशा में जारी रहा तो दुनिया कितनी अलग होगी।

आप पूछते हैं, ठीक है, अगर हम सभी इस पर सहमत हों, तो यह बुरा कैसे हो सकता है? खैर, ईश्वर दुनिया का शासक है और ईश्वर अंततः दुनिया पर परोपकारी शर्तें लागू करेगा। यदि पुरुष और महिलाएं पितृत्व और मातृत्व और पुरुष और महिला के खिलाफ युद्ध छेड़ने की कोशिश करते रहेंगे तो यह अच्छा नहीं होगा। बुरी चीजें घटित होंगी और वे पश्चिम में सामाजिक विघटन के तहत पहले से ही घटित हो रही हैं। युवा पुरुषों का गुस्सा और आपराधिकता और सामूहिक हत्या और यौन लिंग डिस्फोरिया सभी एक टूटने का हिस्सा हैं। यह किसी बेहतर चीज़ की दिशा में प्रगति नहीं है।

मुझे लगता है कि बाइबल इसे एक भयावह चीज़ के रूप में प्रस्तुत करती है जिस पर हमें पुनर्विचार करने और पश्चाताप करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। तो, मुझे लगता है, यहाँ बाइबल, बहुत ही पूजनीय शब्दों में कह रही है कि देखो, परमेश्वर के लोगों को आराधना को इसी तरह देखना चाहिए। मैं कह सकता हूँ कि मैं इस बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ कि पादरी होना कितना कष्टकारी काम है क्योंकि आपके पास आम तौर पर शक्ति नहीं होती है। आप संयुक्त राज्य अमेरिका में भी अमीर नहीं बनते हैं, औसत मंडली 100 लोगों से कम है। यदि वे

अच्छे पादरी हैं तो अधिकांश पादरी मूल रूप से बहुत से लोगों के लिए कचरा बाहर निकाल रहे हैं। वे अमीर नहीं बन रहे हैं और वे उन पुरुषों और महिलाओं की सेवा कर रहे हैं जो मात्रात्मक रूप से उम्मीद के मुताबिक पादरी से भी बदतर पापी हैं।

पादरी पवित्रता में विकसित हो गया है, लेकिन वह बहुत से लोगों की सेवा कर रहा है, जो शायद उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों से कुछ हद तक नाराज हैं क्योंकि वे अकेले रहना चाहते हैं और वे पादरी की मदद से भगवान की दिशा में बढ़ रहे हैं।

वहाँ यह विचार है कि पादरी उच्च अधिकारी हैं और यह उनका गौरवशाली पद है। खैर, दुर्भाग्य से, ऐसे पादरी भी रहे हैं जिन्होंने इसे इस तरह से प्रस्तुत किया और ऐसे लोग भी हैं जो पादरी बनकर अमीर बनते हैं जो गलत नहीं हो सकता है लेकिन कई बार यह भ्रष्ट होता है और यह भ्रष्ट होता है।

लेकिन पादरी का सामान्य आकार बाइबल में एक पति के लिए अपनी पत्नी से प्यार करने के सामान्य आदेश की तरह ही है जैसे मसीह ने चर्च से प्यार किया और खुद को इसके लिए दे दिया। अपनी पत्नी को मसीह के समान प्यार करना चर्च से प्यार करना पापपूर्ण पुरुष गौरव के दृष्टिकोण से अपमानजनक है, लेकिन हृदय परिवर्तन के साथ जो सुसमाचार देता है, एक पति का यह गौरवशाली प्यार हो सकता है जो उसकी पत्नी के लिए बलिदान है। सुसमाचार और ईश्वर के सृजन आदेश में उनकी एक साथ सेवा, मैं इसे क्रमबद्ध संबंधपरक तालमेल कहता हूँ। मैं इसे पूरकवाद नहीं कहता जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है। मैं इसे "आदेशित संबंधपरक तालमेल" कहता हूँ।

पति और पत्नियाँ ईश्वर के अनुबंधित प्रेम के तहत एक अनुबंधित प्रेम में हैं, जो फलदायी और बहुगुणित होने के सृष्टि आदेश से शुरू होता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको यथासंभव अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने चाहिए, लेकिन यदि आप यौन रूप से सक्रिय हैं तो यह विवाह अनुबंध में होना चाहिए। अगर बच्चे इससे आगे आए तो यह अच्छी बात है। फिर क्योंकि आप ईसाई हैं तो आप भी शिष्य हैं और आप परिवारों तक पहुंच रहे हैं। आपके आस-पास के लोग, व्यक्ति, समूह, यह एक पति और पत्नी के बीच तालमेल की एक खूबसूरत तस्वीर है और हम सभी को खुद को संपूर्ण बनाने के लिए दूसरे लिंग के लोगों की जरूरत है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हर किसी को शादी कर लेनी चाहिए, लेकिन बहुत से लोग जीवन में यौन रूप से सक्रिय रहना चाहेंगे और यौन महत्वाकांक्षी लोगों के लिए भगवान की कृपा का साधन शादी है। फिर विवाह में हम पाते हैं कि हमारे पास दो लोग हैं, हम एक साथ कैसे आते हैं और बाइबिल में इसके लिए एक आदेश है और यह एक आदेश होना चाहिए जो पत्नी का उत्थान करता है और साथ ही यदि संभव हो तो पत्नी को एक माँ और एक शिष्य बनने के लिए भी नियुक्त करता है। उनके पति के नेतृत्व में है। निःसंदेह, यह एक ऐसा नेतृत्व है जो पत्नी से वैसे ही प्रेम करता है जैसे मसीह चर्च से प्रेम करता है। तो यह है पति-पत्नी की सामान्य तस्वीर।

तब आरंभिक चर्च एक घरेलू चर्च था। आपके परिवार, पति और पत्नियाँ थीं। भगवान ने ऐसे व्यक्तियों को बुलाया जिन्हें चर्च ने बुजुर्ग या पर्यवेक्षक के पद से मान्यता दी। वे मण्डली के पिता

तुल्य बन गए और वे मण्डली के निर्देश, मण्डली की प्रार्थना मनोदशा, मण्डली की सुरक्षा और निगरानी के लिए जिम्मेदार थे। वे प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और अभिभावक थे।

अब बहुत सारी आधुनिक व्याख्या की दृष्टि से यह एक बहुत ही आदर्शवादी तस्वीर है। दुभाषियों और मैंने पूरकता का उल्लेख किया है, यही विचार है कि पति और पत्नी को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए। उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ हैं और उस समझ में केवल पुरुषों को ही पादरी होना चाहिए क्योंकि यही हम 1 तीमुथियुस 2 और नए नियम में अन्यत्र देखते हैं।

एक और दृष्टिकोण है जिसे समतावादी कहा जाता है। इसमें कहा गया है, ठीक है, समाज इससे आगे बढ़ चुका है और इफिसुस में स्थानीय परिस्थितियाँ रही होंगी जिसके कारण पॉल को ऐसा लिखना पड़ा। और साथ ही, जैसा कि मैंने पहले कहा है, अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि पॉल ने इसे नहीं लिखा है। तो, बहुत से लोगों ने कहा, ठीक है, यह वास्तव में आधिकारिक नहीं है क्योंकि यह पॉल नहीं है। लेकिन अगर हम मानते हैं कि यह पॉल है, तो हम मानते हैं कि यह परमेश्वर का वचन है। फिर हमें सवाल करना होगा कि क्या हम अपने समाज को ऐसा चाहते हैं जिसने पिछली कुछ पीढ़ियों में अचानक निर्णय लिया है कि पुरुषों और महिलाओं में कोई अंतर नहीं है या मतभेद नए नियम के समय से इतने अलग हैं कि हमें एक नए चर्च आदेश और एक की आवश्यकता है नया विवाह आदेश।

नई धार्मिक मानवविज्ञान व्यवस्था में यह एक ऐसा प्रश्न है जो हर किसी को पूछना है उत्तर। सभी चर्च उत्तर दे रहे हैं, वे इस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं कि क्या हमें समलैंगिकों को नियुक्त करना चाहिए, क्या हमें समलैंगिक संबंधों को सामान्य बनाना चाहिए, क्या हमें इसका समर्थन करना चाहिए। बहुत से चर्चों ने इस विचार का समर्थन किया है।

खैर, हमें महिलाओं को पादरी के रूप में नियुक्त करना चाहिए क्योंकि समाज बदल गया है। इसके विचार मैं अब समाज पर व्याख्यान नहीं दे सकता। मैं इस संक्षिप्त वक्तव्य को यहां "आदेशित संबंधपरक तालमेल" पर पोस्ट कर सकता हूँ। मुझे नहीं लगता कि हमारे पास कक्षा में इस पर चर्चा करने का समय होगा, लेकिन मेरे पास बस कुछ प्रतिज्ञाएँ हैं जो 1 तीमुथियुस 2 को बहुत सकारात्मक तरीके से समझने के लिए एक संदर्भ बनाती हैं।

आखिरी बात जो मैं कहूँगा वह यह है कि हमें महिला मंत्रियों की जरूरत है, मैं डायकोनोस शब्द के बारे में सोच रही हूँ। यह फ्रीबी के लिए प्रयुक्त शब्द है, वह एक डायकोनोस थी। लोग इसे डीकन की दिशा में ले जाना चाहते हैं और यह एक और चर्चा है, लेकिन वह शब्द ईसा मसीह के लिए उपयोग किया जाता है, जो पॉल के लिए उपयोग किया जाता है, वह शब्द टिमोथी, डायकोनोस या डायकोनिया के लिए उपयोग किया जाता है, यह दास मंत्रालय है। हम सभी को शिष्य बनने के लिए बुलाया गया है और हम सभी को मंत्री, सुसमाचार के सेवक बनने के लिए बुलाया गया है। केवल पुरुषों के मंत्री होने से चर्च फल-फूल नहीं सकता। हम सभी को शिष्य बनने की आवश्यकता है, हम सभी को एक-दूसरे की सेवा करने और भगवान के हितों की सेवा करने की आवश्यकता है।

ले लो या छोड़ दो लेकिन 1 तीमुथियुस 2 हमें पूजा के क्रम और चर्च संगठन के क्रम की एक झलक देता है जिसमें चर्च रोमन दुनिया में स्थापित किया गया था और जो 20वीं शताब्दी तक अपने लगभग पूरे इतिहास के दौरान पश्चिम था। जो आदेश प्रचलित हुआ। धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ हैं, जो देहाती धर्मपत्रों, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए अपोस्टोलिक निर्देश, सत्र 3, 1 टिमोथी 2 पर अपने शिक्षण में हैं।